श्रीत्रिपुर-सुन्दरी सान्निध्य-स्तवः

क

कल्प-भानु समान-भास्वर-धाम-लोचन- गोचरम्,
किं किमित्यति-विस्मिते मयि पश्यतीह समागताम् ।
काल-कुन्तल-भार-निर्जित-नील-मेघ-कुलां पुरः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। १।।

ए

एक - दन्त - षडाननादिभिरावृतां जगदीश्वरीम्,
एनसां परि-पन्थिनीमहमेक-भक्ति-मदर्चिताम् ।
एक-हीन-शतेषु जन्मसु सञ्चितात् सुकृतादिमाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। २।।

ई

ईदृशीति च वेद - कुन्तल-वाग्भिरप्य निरूपिताम्,
ईश -पङ्कज-नाभ-सृष्टि-कृदादि-वन्द्य - पदाम्बुजाम्।
ईक्षणान्त - निरीक्षणेन मदिष्टदां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ३।।

ल

लक्षणोज्ज्वल - हार-शोभि-पयोधर-द्वय-कैतवात्,
लीलयैव दया - रस-स्त्रवदुज्ज्वलत् - कलशान्विताम्।
लाक्षयाङ्कित - पादपाति - मिलिन्द - सन्ततिमग्रतः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ४।।

ह्रीं

ह्रीमिति प्रति - वासरं जप - सुस्थिरोऽहमुदारया,
योगि - मार्ग - निरूढयैक्य-सुभावनां गतया धिया ।
वत्स! हर्षमवाप्त - वत्यहमित्युदार - गिरं पुरः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ५।।

ह

हंस - वृन्दमलक्तकारुण - पाद -पङ्कज - नूपुर—
क्वाण - मोहितमादरादनु - धावितं मृदु शृण्वतीम्।
हंस - मन्त्र-महार्थ-तत्त्व-मयीं पुरो मम भाग्यतः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ६।।

स

सङ्गतं जलमभ्र-वृन्द-समुद्भवं धरणी - धराद्,
धारया वहदञ्जसा भ्रममाप्य सैकत - निर्गतम्।
एवमादि - महेन्द्र-जाल-सुकोविदां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ७।।

क

कम्बु-सुन्दर-कन्धरां कच-वृन्द-निर्जित-वारिदाम्,
कण्ठ-देश-लसत्-सुमङ्गल-हेम-सूत्र - विराजिताम्।
कादि - मन्त्रमुपासतां सकलेष्टदां मम सन्निधौ,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ८।।

ह हस्त-पद्म-लसत्-त्रिखण्ड-सुमुद्रिकामहमद्रिजाम्,
हस्ति-कृत्ति-परीत-कार्मुक-वल्लरी-सम-चिल्लिकाम् ।
हर्यज-स्तुत-वैभवां भव-कामिनीं मम भाग्यतः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ९।।

ल लक्षणोल्लसदङ्ग-कान्ति-झरी-निराकृत-विद्युतम्,
लास्य-लोल-सुवर्ण-कुण्डल-मण्डितां जगदम्बिकाम् ।
लीलयाऽखिल-सृष्टि-पालन-कर्षणादि-वितन्वतीम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १०।।

ह्रीं ह्रींमिति त्रिपुरा-मनु-स्थिर-चेतसा बहुधाऽर्चिताम्,
हादि - मन्त्र-महाम्बु-जात-विराजमान-सुहंसिकाम् ।
हेम-कुम्भ-घन-स्तनां चल-लोल-मौक्तिक-भूषणाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ११।।

स सर्व-लोक - नमस्कृतां जित-शर्वरी-रमणाननाम्,
शर्व-देव-मनः-प्रियां नव-यौवनोन्मद-गर्विताम् ।
सर्व-मङ्गल-विग्रहां मम पूर्व-जन्म-तपो-बलात्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १२।।

क कन्द-मूल-फलाशिभिर्बहु - योगिभिश्च गवेषिताम्,
कुन्द - सुन्दर-दन्त-पंक्ति - विराजितामपराजिताम्।
कन्दमागम-वीरुधां सुर-सुन्दरीभिरिहागताम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १३।।

ल ल-त्रयाङ्कित-मन्त्र-राट्-समलंकृतां जगदम्बिकाम्,
लोल-नील-सुकुन्तलावलि-निर्जितालि-कदम्बकाम् ।
लोभ-मोह-विदारणीं करुणा-मयीमरुणां शिवाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १४।।

ह्रीं ह्रीं - पराख्य - महा - मनोरधि-देवतां भुवनेश्वरीम्,
हृत्-सरोज-निवासिनीं हर-वल्लभां बहु-रूपिणीम् ।
हार-कुण्डल - नूपुरादिभिरन्वितां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १५।।

श्रीं श्रीं सु-पञ्च-दशाक्षरीमपि षोडशाक्षर-रूपिणीम्,
श्री-सुधार्णव-मध्य-शोभि-सरोज-कानन-चन्द्रिकाम् ।
श्रीगुह-स्तुत-वैभवां पर-देवतां मम सन्निधौ,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १६।।